वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई – 2017

* रिले दौड़
* आप तो बहुत बिमार हो
* अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या
* पति पत्नी में पारस्परिक सम्मान आवश्यक है
* क्या ईश्वर है
* शुभ संग्राम

रिले दौड़

आज माननीय कनल जी रचित "देवात्मा का परिचय" नामक पुस्तक की भूमिका में यह पढ़कर कि मनुष्य की ज्ञान वृद्धि एक रिले दौड़ (वह दौड़ जिसमें दल का प्रत्येक व्यक्ति दौड़ कर कुछ भाग ही तय करता है) है, जिसमें एक ने जो कुछ समझा उसे दूसरे ने और आगे बढ़ाना है। हम इस रिले दौड़ के भागी हैं। हमने अपने अनेक उच्च, देव धर्मी साधकों से बहुत कुछ ज्ञात और अज्ञात रूप से देव रूप के बारे मे सुना और जाना है। हमने अपनी योग्यता के अनुसार इस रिले दौड़ में अपना भाग निभाया है। भविष्य में इस रिले दौड़ में भाग लेने वाले ही बता सकेंगे कि हमने अपना भाग ठीक निभाया है या नहीं।

यह शब्द पढ़कर मेरा दिल और दिमाग, झंझोड़ा गया। हमारे देव समाज के पूर्वजों ने देव समाज के काम को आगे बढ़ाने के लिए, कुछ नैतिक और धार्मिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए, और देवात्मा की अद्वितीय धर्म शिक्षा को फैलाने के लिए एक दौड़ शुरु की थी, जिसका आखरी सांस तक दौड़ते दौड़ते वह इस संसार से चले गए, और उस रिले रेस को आगे बढ़ाने के लिए वह हम पर बहुत भारी जिम्मेवारी डाल गए, परन्तु आज हम अपनी अवस्थाओं का अध्ययन करके देखें, समाज के हालात का निरीक्षण करके देखें, तो क्या पाएंगे, यही कि न केवल उस दौड़ को हम जारी नहीं रख सके, उल्टे मार्ग चलकर समाज का रुख तबाही की ओर कर दिया। हम आज के हालात पर दृष्टिपात करके क्या देखते हैं: -

(1) समाज जो एक पवित्र देव समाज थी, जिसका प्रत्येक मैम्बर आठ पापों से मुक्त ही नहीं, अपनी एक एक प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अपनी जान तक की कुर्बानी करने को तैयार था, उस समाज की गिनती बढ़ाने के लिए ऐसे जनों को उसका मैंबर बनाया जा रहा है। मैंबर ही नहीं आगे श्रेणीयों में भी उन्नत किया जाता है। जिनकी प्रतिज्ञा पब्लिक के सामने टूटती हुई देखी जाती हैं और उनके साक्षात परमाण हैं परन्तु उन्हें नजर अन्दाज किया जाता है। इस प्रकार देव समाज को दागदार बना रहे हैं।

(2) हमारी समाज एक धार्मिक और सुधारवादी समाज थी, परन्तु हम मानव सन्तान ने उसको राजनैतिक अखाड़ा बना दिया है। वह समाज जिसमें एक एक पदवी देने के लिए योग्य और धार्मिक जनों को प्रार्थनाएं की जाती थी ताकि वह सबकी रहनुमाई कर सकें, उस समाज में एक एक पदवी को पाने और बनाए रखने के लिए योग्य आत्माओं को पछाड़ा ही नहीं गया, बल्कि उनको सताया, तड़पाया और दुख पहुँचाया गया है। पदवियाँ प्राप्त करने के लिए तरह तरह के हथकण्डे प्रयोग में लाए गए हैं।

(3) जिस समाज में स्वार्थ त्याग की रिवायत थी देवात्मा की देव वाणी "अहं स्वार्थ का उत्पादक, स्वार्थ भाव जीवन का नाशक स्वार्थ तजो

शेष पृष्ठ 20 पर

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 5
मई 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आप तो बहुत बिमार हो

यह शब्द मेरे एक उपकारी ने मुझे आज से कोई 60 वर्ष पहले कहे थे। सुबह 2 से 4 बजे का समय था। मैं पहले पहल अपने दो कालजिएट साथयों के साथ मोगा में देव समाज की पावन धरती पर गया हुआ था। सुबह 4 बजे का घण्टा बज चुका था। पवित्र विकासालय के (सिजदा करने योग्य) सेहन में गहमा गहमी थी। धरती के श्रंगार श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसी मूर्तियां और फरिश्तों जैसे समाज के कर्मचारी, कुछ रूहानी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आए व्यक्तियों और विकासार्थियों की सुन्दर चहल पहल लगी हुई थी। अधिकतर अपनी सुबह की आवश्यकताओं से निबट रहे थे।

मैं भी इसी मकसद के लिए अपने सोने वाले कमरे में साथियों को सोता हुआ छोड़कर उस पावन सेहन में उच्च हस्तियों के दर्शन करता, उनके आगे शीश झुकाता और "सत्य देव की जय" बुलाता, अपने सौभाग्य को महसूस करता फिर रहा था कि मेरे सामने मेरे एक उपकारी, एक ग्रामीण जाट कर्मचारी अर्थात माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी आ गए। उनसे भेंट होने पर मैने सिर झुका कर, हाथ जोड़कर, काफी झुककर सत्य देव की जय करके प्रणाम किया। मेरा प्रणाम स्वीकार करते हुए, वह मेरे पास रुक गए और धीरे से यह फरमाया "ओहो, श्रीमान जी आप तो बहुत बिमार हो" यह सुनकर मैं सहज ही अपनी बाजू बढ़ाकर कहा श्रीमान जी, मैं तो बिल्कुल ठीक हूं, मैं बिल्कुल बिमार नहीं हूं। उस समय मेरी आयु 23 – 24 वर्ष थी, मैं हृष्ट पुष्ट खूब हंसने, खेलने वाला नौजवान था, यह बात सुनकर मैं हक्का, बक्का रह गया। श्रीमान जी कहने लगे, भाई तूं मन का बिमार है, शरीर का नहीं। यह बात सुनकर मैं इधर उधर देखने लगा, मैं यूनिवर्सिटी से आया था, और अपने आपको बड़ा पढ़ा लिखा समझता था। एक ग्रामीण कर्मचारी की बात मेरी कुछ समझ में नहीं आई। श्रीमान जी ने मुझे समझाते हुए फिर कहा "रात को जब मैं आप लोगों के पास आया था। श्रीमान जी ने जब रात की बात शुरू की तो मैं खुश हो रहा था कि रात को जो ज़ोर देकर उनको दूध पिलाया था, उसके लिए मेरी तारीफ करेंगे, परन्तु मेरी हैरानी की हद न रही, जब श्रीमान जी ने रात की मेरी सेवा को ही मेरा बड़ा रोग बताया। उन्होंने मुझे समझाते हुए बताया कि रात तुम तीनों साथी अपने अपने गिलासों में दूध डाले बैठे थे और पीने के लिए तैय्यार थे। मेरे आने पर तुमने जिद करके अपना दूध

पिला दिया, जबकि मैं दूध पीकर आया था। मेरे कई बार मना करने पर भी मुझे दूध पिलाने के लिए जिद करते रहे। मैं आप लोगों से सेहत में मजबूत हूं, मेरे यह कहने पर भी आप लोगों को दूध की ज़्यादा आवश्यकता है, फिर मैंने यह भी कहा कि मैं बड़ा हूं, मेरा कहना मानो और अपने हिस्से का दूध तुम पीओ, परन्तु फिर भी आप नहीं माने और मुझे दूध पिलाकर ही चुप हुए। श्रीमान जी के इतनी मत्थापच्ची करने पर मुझे कुछ समझ में आया कि श्रीमान जी का कहना है कि बड़ों का कहना मानना चाहिए था, अपनी मनमर्जी नहीं चलानी चाहिए थी। कुछ तो ग़ल्ती हुई है, नहीं तो श्रीमान जी ऐसे ही नहीं कहते थे। परन्तु मैं बिमार वा रोगी हूं, यह बात मुझे फिर भी समझ नहीं आई।

उक्त उपकारी ने बेशक मुझे स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि मैं रूहानी रोगी हूं। परन्तु मुझे ऐसा कुछ दिखाई नहीं दिया कि रूहानी रोगी हूं। यह कौन सा रोग है यह रोग कितना भयानक और खराब है। इसकी हानि क्या होती है। इन सचाईयों के विषय में उस समय कोई रोशनी नहीं मिली। उपकारी की बात तो असंख्या गुणा कीमती थी, परन्तु मैं कुछ नहीं समझा। उस विषय में मुझे कोई सोच, फिकर पैदा न हुआ। पहले की तरह ही मौज मस्ती में फिरता रहा।

मैं रोगी था और बेहद बड़ा रोगी था, अपनी मनमर्जी करना, ठीक समझना वा बड़ों की बात को महत्व न देना अर्थात अंह रोग से बड़ा कोई रूहानी रोग नहीं। यह रोग रुह का कैंसर हैं, यह अधिकतर मानव को, सेवकों को, कर्मचारियों को सारी उमर कब्र तक जाने के समय तक ही अकसर अदृश्य रहता है। अपना आप अकसर हमें धोखा दे जाता है। इससे बढ़कर घातक वा सर्वनाशक और कोई रूहानी रोग नहीं।

गुरू महाराज जी अद्वितीय देवात्मा, सर्वोच और शिरोमणी आर्विभाव की शरण प्राप्त करके इससे बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं, परन्तु यह रोग रखकर, उक्त सौभाग्य भी बिल्कुल सफल नहीं हो सकता। केवल पत्तों को धोने का ही काम होता है, जड़ों तक पानी नहीं पहुंचता।

हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि महान योग्यताओं के मालिक श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज को यह रोग लग सकता है तो हमारी बेसुधि की क्या अवस्था हो सकती है। गुरू महाराज जी विराजमान थे, तो भी वह लम्बे समय तक वह इस रोग से बेखबर रहे, तो हम लोगों का क्या हशर हो सकता है। अंह प्रियता क्या होती है, इस सम्बन्ध में परम पूजनीय भगवान ने फरमाया "अंह प्रियता क्या? अपने संस्कार, अपने मत, अपने स्वभाव, अपनी रूचि, अपनी वासना, अपनी इच्छा आदि का प्यार, चाहे इनमें से कोई एक या प्रत्येक ही उस के लिए और अन्य अस्तित्वों के लिए कितनी ही बुरी, कितनी ही पाप वा अपराध मूलक, कितनी भी हानिकारक क्यों न हो। साधारण मनुष्य अपने किसी मिथ्या से मिथ्या संस्कार या मत या विश्वास, अपने बुरे से बुरे स्वभाव और आचार के विरुद्ध कुछ सुनना पसन्द नहीं करता और अपनी एक एक नीच से नीच और बुरी से बुरी और पापी से पापी और मिथ्या से मिथ्या गति को इतना प्यार करता है, कि उस पर और तो और अनेक बार अपने किसी सच्चे हितकारी की ओर से किसी चोट पहुंचने से वह बिलबिला उठता है, आंखें बदल लेता है, कोप से जल उठता है, मुंह फेर लेता है, घृणा से भर जाता है

और उसको श्रद्धा और सन्मान की दृष्टि के साथ देखने के स्थान पर अश्रद्धा और शत्रु की नज़र से देखता है और यदि उसके ईलावा वह अपने हृदय में द्वेष या प्रतिशोध (बदले) का प्रबल भाव रखता हो तो कृतघ्न और सताने वाला बनकर उसको तरह तरह से सताने और हानि पहुंचाने के लिए तैय्यार हो जाता है। ऐसे सब जन, अपने आत्मिक हित और अहित के बोध से खाली होते हैं। सत्य और असत्य के बोध से भी खाली होते हैं। पाप और असत्य को मुख वा लेख के द्वारा बुरा कहकर भी दिल से अहित और असत्य के पूर्ण अनुरागी होते हैं। इस लिए सारी पृथ्वी पर इस क़दर मिथ्या और पाप जारी है।"

अंह सम्बन्धी नीच अनुराग कोई एक नहीं यह एक फसल है जो हमारे हृदय के भीतर भरी हुई, है। यह क्रमवार मोटे तौर पर गुरू महाराज़ ने इस प्रकार बताए हैं। स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, घमंड, नीच घृणा, मान प्रशंसा, इर्षा, द्वेष आदि आदि। हम अकसर घमंड को अहंकार या अकड़ को, या ego समझकर ही अंह को समझने का दावा करते हैं। इसके विस्तार को समझना महा कठिन है।

हर नीच अनुराग का स्वभाव है। कि वह हृदय के भीतर अन्धेरा पैदा करता है। परन्तु अंह सम्बन्धी नीच अनुरागों की परत दोहरी ही नहीं, सैंकड़ों परतें रखते हैं। लाख चतुराई रखकर भी हम उसके प्रकृत रूप को नहीं देख सकते। कबीर साहिब जैसी महान सात्विक वृति रखने वाले महात्मा जी भी अनुभव करते थे, "कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह, मान बड़ाई ईर्षा दुर्लभ तजना यह।"

अंह का अधिकार रखकर हम तीन चीजें नहीं देख सकते। एक अपने आप का प्रकृत रूप, दूसरा पूजनीय भगवान के अद्वितीय देवरूप के दर्शन, तीसरा अपने जीवन के सच्चे लक्ष्य को नहीं देख सकते। देवआत्मा के प्रकृत रूप के दर्शन बिना देव प्रभावों तक कोई रसाई नहीं होती। देवात्मा के साथ कोई सम्बन्ध ही आरम्भ नहीं होता, और न हमारा किसी नीच अनुराग से विरत होने का ही कोई सच्चा लक्ष्य बन सकता है।

गुरू महाराज की अपार कृपा द्वारा, मुझे साफ अपना अंह द्वारा महा रोगी और कोढ़ी रूप किसी अंश साफ दिखाई देने लगा, ज्यों ज्यों भगवान के प्रभाव किसी अंश प्राप्त हुए, मुझे अपना आप अन्धा और पागल दिखने लगा, मुझे अपने भिन्न सम्बन्धों में अपने भयानक, अति दुखदाई और महा हानिकारक महा घृणित व्यवहार नज़र आए। माता पिता जैसी जान, कुर्बान करने वाली हस्तियों के सम्बन्ध में, दुकानदारों के सम्बन्ध में, उपकारी फरिश्ते धर्म सम्बन्धियों के सम्बन्ध में, आम धर्म सम्बन्धियों के सम्बन्ध मे, विशेष रूप से अपने से छोटों के सम्बन्ध में, सफर करते हुए अपने साथी मुसाफिरों के सम्बन्ध में और सम्पर्क में आने वालों के सम्बन्ध में, पशुओं, पक्षियों के सम्बन्ध में, अपना आप महा ख़ौफनाक, गुण्डा, दरिंदा, कसाई, महा अपराधी, एक पागल सांड जैसा रावणी रूप बहुत हद तक दिखाई देने लगा। अपना आप जालिम, दोषी, महा नीच, महां दृष्ट, घृणित और अपराधी नज़र आ आकर अन्दर से बहुत दुखी हो होकर रोने चिल्लाने, हाथ बांध बांधकर फरयादें करके क्षमा मांगने, किसी किसी के पैरों में गिरने और मिन्नते करके क्षमा-याचना करने के लिए पूजनीय भगवान के प्रभावों ने मजबूर कर दिया। अपने और नीच अनुरागों के द्वारा हुए महा अपराध, हानियां,

विश्वास - घातकताऐं, अपने जिल्लादी रूप नज़र आ आकर मुझे तड़पाने लगा और मेरा सच्चा भला होना शुरू हो गया। यह सिलसिला समाप्त नहीं हुआ, गुरू की कृपा से अपनी और नीचताएं दिखाई देने लगती हैं। जैसे हिमालय की एक चोटी पर पहुंचकर, दूसरी दिखने लगती है, उसी प्रकार अपने एक सम्बन्ध में नीचता देखने योग्य होने पर दूसरी नीचता नज़र आने लगती है। अपनी जैसे जैसे नीचता, दृष्टता और अपराध दिखते जाते हैं, उसके द्वारा मुझे अपना प्रकृत रूप दिखाई दे रहा है। यदि मेरे भीतर देव प्रभावों की रसाई का क्रम जिस हद तक भी चल सका, उस हद तक मैं जरूर अपने प्रकृत नीच रूप को देखने योग्य और उससे मुक्त हो सकूंगा, यह निर्भर करता है महाराज के अमृत - मई देव प्रभावों तक पहुंच कितनी स्थाई बनी रहती है।

मैं गुरू महाराज का और मुझे संवारने, तराशने वाले उपकारी फरिश्तों का किसी प्रकार भी धन्यवाद नहीं कर सकता, जिनकी कृपा बिना मैं अपना महा नीच, महा नापाक, महा दुष्ट, महा अपराधी, दोषी, विश्वासघाती, महा स्वार्थी, जालिम और महा हानिकारक रूप देखने के बिना अन्धा ही मर जाता।

जब मैं सोचता हूं कि मेरे ऊपर ऐसी कृपा कैसे हो गई, जिस से मुझे सच्चा एहसास होने लग पड़ा कि, 'मैं तो बहुत ही बिमार और रोगी हूं, तो मैं श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की चरण धूल का ध्यान करके सजदा करने लग जाता हूं। उनके साधनों का बार बार पाठ करके मेरा ध्यान फिरता गया। उनको गुरू महाराज ने जो साधन शायद 4 जनू 1904 को करने के लिए बताया था, उन साधनों को बार बार पढ़कर ही मुझे उनकी आवश्यकता बोध हुई। एक बार श्रद्धेय श्रीमान जी ने अपने से छोटे भाई माननीय श्री हितैषी सिंह जी को अपने एक पत्र में लिखा था, उसे बार बार पढ़ पढ़कर 30 वर्ष से भी पहले एक 26 जनवरी की सुबह मेरे हृदय के भीतर एक ज़ोरदार प्रेरणा हुई मैं हररोज़ अपनी नीचताओं पर चिन्तन करके उन्हें लिखने लग गया कि जो साधन अब भी जारी है। कभी ही कोई नागे पड़े हैं, परन्तु मैंने यह साधन नहीं छोड़ा। पहले एक दो महीने तो कुछ पता नहीं लगा। 3 - 4 महीने लगातार इस साधन में से गुज़रकर मुझे अपने इस महा रोग का कुछ न कुछ पता लगने लगा। धीरे धीरे मुझे अपने अंह का कुछ बोध होने लगा कुछ न कुछ उसके घटने से मेरी रसाई गुरू महाराज के अमृत दायनी प्रभावों तक होने लगी और मेरा रूहानी मौत के मुंह से बचने का सिलसिला आरम्भ हो गया।

मेरी यह कामना है कि मेरा यह उक्त रोग जितनी भी मेरी योग्यता अनुसार नेचर ने सम्भव रखा है, अधिक से अधिक घट सके और जितना मेरी योग्यता मुझे इजाज़त दे मेरा हृदय गुरू महाराज के अमृत के साथ जुड़ सके। मेरे बहुत अच्छी योग्यता रखने वाले प्यारे धर्म सम्बन्धी भी उक्त साधन को अपनाकर अपना और किसी और साथी का भला कर सकें। परम पूजनीय भगवान की विशेष कृपा हम तुच्छ और असहाय आत्माओं के ऊपर अधिक से अधिक हो सके। तब ही हम कोई अपना और दूसरों का भला कर सकते हैं।

बलदेव सिंह

अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिन चर्या – 1

पिछले दिनों मुझे माननीय पी०वी० कनल साहिब की अंग्रेजी में लिखित पुस्तक "My Bhagwan What I saw of Him" पढ़ने का शुभ अवसर मिला। जैसा कि हमें ज्ञात है कि कनल जी में गुरू महाराज के लिए बहुत गहरी श्रद्धा थी, उस श्रद्धा से भरपूर उनका गुरू के लिए कुछ भी लिखना पढ़ने वालों को भी कुछ न कुछ उनकी योग्यता के अनुसार झुका देता है।

उन्होंने फरमाया है कि परम पूजनीय भगवान के सूक्षम बोधों को सराहने और उनकी महानता को जानने और उनके इस अद्वितीय रूप में विश्वास वा श्रद्धा को बढ़ाने के तीन मार्ग हैं। (1) उनकी फिलास्फी अर्थात शिक्षा (2) उनकी जीवनी (3) उनके प्रतिदिन के जीवन की घटनाएं। परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा की महानता को समझने के लिए बहुत आसाधारण मान्सिक वा हार्दिक योग्यताओं की आवश्यकता है, जो बहुत ही कम मात्रा में मानव जीवन में मिलती हैं। तीसरी पहुंच हमारी गुरू महाराज के प्रतिदिन के जीवन की घटनाओं में है, बेशक यह बातें बड़ी न हों, इतनी नाटकीय भी न हों, लेकिन इतनी ठोस हैं जो उनके अद्वितीय रूप को दर्शाती हैं। इस पुस्तक में कनल जी ने उनकी आखों देखी प्रतिदिन की घटनाओं को लिखा है, जो उनकी श्रद्धा का स्त्रोत बनती रही हैं और हम जैसे अयोग्य आत्माओं की श्रद्धा का कुछ न कुछ स्त्रोत बन सकती हैं, जो उनकी सर्व्वोच शिक्षा की गहराई को समझने में असमर्थ्य हैं।

उन्होंने इन घटनाओं को पांच भागों में बांटा है, जो गुरू महाराज के अध्यात्मिक वैभव को दर्शाती हैं।

(1) पहले भाग में उन घटनाओं का ज़िकर है कि गुरू महाराज में कैसे उन सब चारित्रिक विशेषताओं का विकास हुआ जो किसी सम्यता का अंग हैं।

(2) दूसरे भाग में वह घटनाएं हैं जो गुरू के अपने शिष्यों की शारीरिक सेवा की है, जो दिल को छू जाती हैं।

(3) तीसरे भाग में भलाई के लिए उनके अथाह अनुराग की घटनाएं हैं।

(4) चौथे भाग में सचाई के प्रति गुरू महाराज के अथाह अनुराग की झलकियां पेश की गई हैं।

(5) पांचवें भाग में देवात्मा की वाणीयां हैं।

परम पूजनीय भगवान के जीवन की बहुत सी घटनाएं उनकी मौजूदगी में कनल जी के द्वारा सांईस ग्राऊंडड रैलीजन (Science-Grounded Religion) अग्रेजी पत्रिका में छपती रही हैं। इसलिए सब घटनाएं प्रमाणिक हैं।

पहली बार सन 1915 में जब कनल जी ने गुरू महाराज की कुछ घटनाएं अंग्रेजी पत्रिका के विशेष अंक में छापी तो समाज में तहलका मच गया। विशेष सन्मान के योग्य गुरू महाराज के ज्येष्ट पुत्र श्री पंडित हर नरायण जी अग्निहोत्री ने उत्साह से भरकर इस लड़ी को जारी रखने के लिए कहा, तो यह घटनाएं इस पत्रिका में छपती रहीं, जिनको इकट्ठा करके श्री कनल में इन्हें किताब की शक्ल में छापा। श्रद्धेय पंडित जी द्वारा उन्हें ऐडिट (edit) किया जाता था।

कनल जी ने बहुत भावुक होकर लिखा है: –

"मैं अपने जीवन के वह पल, सबसे सर्वश्रेष्ट

मानता हूं, जब मैं देवात्मा के सामने खड़ा होता, उनके शब्दों को सुनता जो सम्पूर्ण उच्चत्म स्त्रोत से निकलते, जो इतने शक्तिशाली होते और सत्य को स्थापित करते कि, वह केवल मेरे मस्तिष्क को ही रोशन नहीं करते थे, बल्कि मुझमें जीवन और शक्ति संचार कर देते थे। मैंने सदा ही यह अनुभव किया और व्यक्त किया है कि वह सारे उपदेश या शब्द, जो देवात्मा अपने दीन हीन शिष्यों को देते, चाहे किसी भी विषय पर होते उन्हें पक्के तौर पर उसी समय रक्षित (Permanant करने) करने चाहिए, ताकि वह सदा के लिए मानवता के प्रेरणा के स्त्रोत हो सकें।"

इस भाव को लेकर ही उन्होंने ऐसे शब्दों और उपदेशों का संग्रह किया और उन्हें पुस्तक के रूप में छापा, जिसे पढ़कर मैं प्रभावित हुई हूं और प्रेरणा प्राप्त की है। इन्हें पढ़कर ऐसा लगता है कि साक्षात हम भगवान को सुन रहे हैं क्योंकि श्रद्धेय कनल जी का लिखने का ढंग और उनकी गहरी श्रद्धा से यह पुस्तक लिखी गई है। हम कोशिश करेंगे कि प्रत्येक पत्रिका में वह घटनाएं दी जाएं, ताकि श्रद्धावान पाठक उससे लाभ उठा सकें।

<u>पहला भाग</u> - <u>गुरू महाराज में सभ्यता का विकास।</u>

सबसे पहला सुधार जो पूजनीय भगवान ने अपने धर्म में किया, कि धर्म थ्यूरी और प्रैक्टस की चीज़ है और फरमाया कि सम्बन्धों में जीना मनुष्य के लिए अवश्यम्भावी है। उसके अध्यात्मिक विकास के लिए सम्बन्ध आवश्यक हैं। धार्मिक इन्सान वह नहीं जो घर और सम्बन्धों से नाता तोड़ दे, जीवित और आजीवित सम्बन्धों से उपराम हो जाए, बल्कि सफाई, सुन्दरता, समय की पाबन्दी, सन्मान, उचित प्रशंसा, कर्तव्य पालन, कृतज्ञता, श्रद्धा अध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं। अपनी पहुँच के अनुसार सुख सुविधाएं रखना अधर्म नहीं। परन्तु यह रखकर अध्यात्मिक विकास के लिए अधिक से अधिक संग्राम करने से इनकी सफलता है।

जैसे लेखक ने लिखा है -

देवात्मा की प्रतिदिन की दिनचर्या ठोस और शरीर को चूर चूर कर देने वाली थी, क्योंकि उनके लिए धर्म सम्बन्धों से वैराग्य नहीं था। जब सम्भव था वह अच्छे घर में रहे। घर की सफाई, परिष्कारता देखते ही बनती थी। छोटी से छोटी जगह भी उनकी छू से चमक जाती थी, कहीं भी रहे वह फूल लगाना, उन्हें गोडी करना वा करवाना, पानी देना, उनके बहुत व्यस्त जीवन का भाग था। वह हर वस्तु की सम्भाल जहां तक सम्भव था करते वा करवाते थे। मौके के अनुसार अच्छे कपड़े पहनते थे। वह साधुओं की तरह पैसे से घृणा नहीं करते थे, बल्कि पैसे को मनुष्य की ज़रूरतों के लिए आवश्यक समझते थे। लेकिन धन उपयोगी कामों में लगाया जाए यह उनका फरमान था। इस प्रकार भगवान ने सभ्यता के उस प्रत्येक अंग को अपनाया जो उपयोगी था। उनके लिए धर्म उच्च ज़िन्दगी का नाम था, न कि संसार को त्यागने का। उनका सारा जीवन अथाह संग्राम का जीवन रहा और हर प्रकार के कर्तव्यों का सर्वोत्म ढंग से उन्होंने निर्वाह किया न कि और धर्मो की तरह "आनन्द और शान्ति" को लक्ष्य बनाया।

<u>निकम्मे पन के लिए गहरी घृणा</u>

देवात्मा निकम्मे पन को बहुत घृणा करते थे, विशेष तौर पर जब कोई सेहतमन्द हो और कुछ उपयोगी काम कर सकता हो परन्तु निकम्मा पड़ा रहे। निक्म्मे - पन को उन्होंने पाप की संज्ञा दी है। उनकी लासानी देव समाज दूसरी बुराईयों के ईलावा निक्म्मे - पन

के पाप से भी छुटकारा दिलाने के लिए बाध्य है।

कनल जी लिखते हैं "कि मैंने व्यक्तिगत तौर पर देखा है कि गुरू महाराज की सेहत कई बार इतनी खराब होती थी, काम का और बोझ उनके लिए असहनीय होता था, डाक्टर कई हफतों के लिए पूरे आराम की हिदायत देते थे। परन्तु काम के बिना वह बेहद बेचैन हो जाते। एक बार उन्होंने फरमाया: -

"मेरे शारीरिक दुखों की तकलीफ के साथ साथ मैं कितनी बार असह्य दुख महसूस करता हूं कि मेरी शारीरिक बेहद रोगी अवस्था के कारण मैं दूसरों की भलाई का उतना काम नहीं कर सकता, जितनी करने की मेरी प्रबल इच्छा है।"

यही कारण था कि जब वह अपनी रोगी अवस्था से थोड़ा सा भी उभरते, तो डाक्टरों की हिदायतों और शिष्यों की बार 2 प्रार्थनाओं के बावजूद वह अपने मिशन के काम में लग जाते।

उसकी एक घटना यहां देकर बाकी अगली पत्रिका में देंगे। 1915 का सन था। गुरूमहाराज सक्खर (सिन्ध) में अपनी बिमारी से कुछ उभरने के लिए पधारे। कनल जी लिखते हैं कि "मैं उस समय वहां था। हमें पूजनीय भगवन की खराब सेहत के विषय में पहले बताया गया था। सो हम जानबूझकर उनसे परे रहते क्योंकि हम जानते थे कि नहीं तो वह दूसरों की भलाई के लिए अथाह प्यार से परिचालित होकर हमारी आत्माओं का भला करने से नहीं रह सकते थे। परन्तु सब सावधानियों के बावजूद हम फेल हो गए।

भगवान देवात्मा हमारी आत्मिक भलाई के लिए कुछ न कर सकने को सहन नहीं कर सकते थे। केवल दो हफ्तों के लिए उन्होंने हमारे स्थान को अपनी वर्तमानता से पवित्र करना था। नियमित रूप से तीन बातचीत के द्वारा सभाएं कराई, जो हमारे, जीवनों को बहुत उभारने वाली थी, जिनके विषय थे, मनुष्य का सच्चा और सर्व्वोच्च आदर्श" "जीवन में सात्विकता का विकास" आदि आदि।

शारीरिक अस्वस्थता के साथ बोलने से जो उनकी सेहत पर बोझ पड़ा, उससे इतने कमज़ोर हो गए, वह कठिनाई से बोल सकते थे, इसलिए वह वापिस लहौर चले गए।

हम सुख अनुरागी मनुष्य देवात्मा के देव भावों का अनुमान नहीं कर सकते कि कितनी बार मृत्यु-प्राय: अवस्था में पहुँच कर भी, हम मानवों के लिए अथाह संग्राम किया है। हमारी छोटी सी समस्या से ही सर्वप्रथम हमारा अपनी भलाई का काम छूटता है। काश! हम गुरू महाराज की इस तड़प को समझ सकें और कुछ न कुछ निकम्मे पन से निकल सकें।

(सुनजीत बराड़)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

पति पत्नी में पारस्परिक सम्मान आवश्यक है।

यदि पति - पत्नी माता - पिता के रूप में एक शान्तिमय और गौरवपूर्ण घर बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक पति को अपनी पत्नी को और प्रत्येक पत्नी को अपने पति को अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन में सम्मान देना चाहिए।

विवाह का सम्बन्ध एक बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है, और क्योंकि विवाहित जोड़े को सदा एक - दूसरे के साथ रहना तथा एक - दूसरे के लिए जीना होता है, इसलिए इस घनिष्ठ मेल - जोल में एक - दूसरे को घृणा करने का डर बना रहता है। विवाह के कुछ समय बाद प्राय: वे एक - दूसरे को कटु - वचन भी कहने लगते हैं और धैर्यहीन पति क्रोध में आकर अपनी पत्नियों को मार भी बैठते हैं। पति - पत्नी में इस प्रकार कटु - वचनों का प्रयोग तथा मार - पीट से बढ़कर जीवन में और कोई बड़ी भूल नहीं हो सकती।

एक बार मैं अपने घर से रेलवे स्टेशन को जा रहा था कि मार्ग में एक गली में बड़ा भीषण दृश्य देखने में आया। दो नवयुवक एक बूढ़े को मार रहे थे मैं भागकर वहाँ पहुँचा और मेरे रोंगटे खड़े हो गए जब मुझे यह पता चला कि उन नवयुवकों के द्वारा धरती पर गिराया हुआ वह बूढ़ा उनका अपना बाप था। मुझे देखकर उन युवकों ने अपने पिता को छोड़ दिया और मैंने उसे उठाकर खड़ा किया। मैं उसी गली में उसके घर गया और उसकी पत्नी से मिला मैंने उस औरत से पूछा, "यह झगड़ा किस कारण हुआ? क्या तुम्हें मालूम था कि तुम्हारे पति को तुम्हारे ही बेटे मार रहे थे?" उसने उत्तर में कहा, "जो कुछ हुआ, उसका मुझे खेद है। लेकिन आप जानते हैं कि बेटा, अपने बाप द्वारा भी, माँ को पिटते नहीं देख सकता। मेरा पति किसी घरेलू कारण से मुझसे नाराज था। मेरे विरोध करने पर उसने मुझे जोर की ठोकर मार दी। मेरे बेटे इसे बरदाश्त नहीं कर सके और बाप - बेटों का यह झगड़ा मुझे लगाई गई ठोकर के कारण ही खड़ा हुआ।" क्योंकि मुझे गाड़ी पकड़नी थी, इसलिए मुझे वहाँ से जाना पड़ा। परन्तु अपने स्थान पर पहुँचने तक का सारा रास्ता बाप के बेटों द्वारा पिटने का यह दृश्य मुझे पीड़ित करता रहा। इस बात का मुझे भी बहुत दु:ख हुआ कि पति ने पत्नी को पीटा। और इतने पर भी मुझे बताया गया कि पति अपनी पत्नी के पीछे दीवाना था। हर समय अपनी पत्नी के निकट रहने की इच्छा से ही उसने नौकरी छोड़ दी थी। सम्भवत: वह उससे प्रेम करता होगा, परन्तु मुझे विश्वास है कि उसका आदर तो नहीं करता था।

कई वर्ष बाद एक उच्च अधिकारी ने मुझसे नीति - शिक्षा के सम्बन्ध में, जो मैं कालेज में दिया करता हूँ, स्पष्ट कहा, "लड़कियों को अपने पति से प्रेम करना बताना चाहिए, लेकिन उससे भी अधिक पति का सम्मान करना सिखाना आवश्यक है। एक - दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखने से वे एक - दूसरे को कठोर और अपमानजनक शब्द न कहेंगे और आपस में मार - पीट तो उनके लिए निश्चय ही असम्भव हो जाएगी। मैं हमेशा अपनी पत्नी से यही कहता हूँ, मुझे प्रेम भले कम करो, सम्मान अधिक दो।"

मुझे एक शिक्षाप्रद घटना का निजी अनुभव है। एक बहुत पढ़ा - लिखा पति जो अपनी पत्नी को चाहता तो खूब था, परन्तु उसका आदर कम करता

था, एक बार ऑफिस जाने से पूर्व उससे नाराज़ हो गया। उसने अपमान-जनक भाषा का प्रयोग किया जिससे उसकी औरत की आँखों में आँसू आ गए। उसके पाँच वर्ष के बालक ने इस खेदपूर्ण झगड़े को देखा और चिन्तापूर्वक अपनी माँ को आँसू पोंछते देखता रहा।

पति ऑफिस से लौटा। जब भी वह घर लौटता, सबसे पहले बालक को गोद में लेकर चूमता। उस दिन भी वह बालक को गले लगाने लगा। बच्चा चिल्लाया, " मुझे मत छुओ! तुमने मेरी माँ को डाँटा है और वह रोई है। मैं तुम्हारे पास नहीं आता।"

उस बालक के पिता ने मुझे बताया कि किसी महात्मा के उपदेशों से भी शायद उस पर इतना प्रभाव न पड़ता, जितना उस भोले बालक के निर्दोष शब्दों से पड़ा। उस दिन से मैं अपनी पत्नी से कभी कठोर वचन नहीं बोला। तब से मुझे इस आदेश 'अपने साथी को प्यार भले कम करो, सम्मान अधिक दो' का वास्तविक मूल्य समझ पड़ा।

विवाहित जीवन की बहुत-सी दुर्घटनाएँ इसलिए होती है कि पति-पत्नी ये समझते हैं कि विवाह में केवल प्रेम ही चाहिए, चाहे परस्पर सम्मान हो या न हो।

कुछ जोड़े तो यह मानते हैं कि गृहस्थी में केवल प्रेम ही ज़रूरी है। पारस्परिक सम्मान को तो वह बनावटी और स्नेहरहित कहते हैं। मैं उनसे सहमत नहीं। पारस्परिक सम्मान प्रेम का विरोधी भाव नहीं है, बल्कि इससे तो प्रेम शुद्ध और मज़बूत बनता है।

मुझे एक छात्रा की घटना याद है, जिसे उसकी माता मेरे कालेज में दाखिल करवाने आई थी। यह कोई आसाधारण बात न थी। परन्तु मुझे हैरानी तब हुई जब कुछ दिन पश्चात मुझे उस लड़की के पिता की ओर से एक रजिस्टर्ड पत्र मिला, जिसमें उसने मुझसे प्रार्थना की थी कि मैं लड़की को बी.ए. कर लेने के लिए प्रेरित करूँ, और वह लड़की की शिक्षा के प्रति अपनी गहरी रुचि दिखलाने के हेतु उसके नाम पर दस हज़ार रूपया करवाने को भी तैयार था।

मैंने लड़की को बुलाया और वह पत्र उसे पढ़ने को दे दिया। वह चिल्ला उठी, "मैं उसके धन की एक पाई भी नहीं छूना चाहती। मैं अपनी माता के आश्रय में रहती हूँ और उसकी आश्रित बनी रहूँगी। मेरे माता और पिता एक-दूसरे से जुदा रहते हैं और मैंने अपना चुनाव कर लिया है। मैं माँ के साथ रहूँगी।"

एकाएक लड़की द्वारा अपने पिता का तिरस्कार देखकर मैं हैरान रह गया। उन दोनों में भी झगड़े का कारण पत्नी के प्रति पति में सम्मान का अभाव था।

एक दिन एक बड़ा शिक्षक मुझे मिलने आया। वह एक युवक के सम्बन्ध में मेरे पास आया था। वह युवक एक स्कूल का हैडमास्टर था और हमारे कालेज में पढ़ाता भी था। शिक्षक ने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उस युवक के दूसरे विवाह का विरोध न करूँ। "मैं दो विवाहों की अनुमति क्योंकर दे सकता हूँ?" मैंने उस शिक्षक को उत्तर दिया।

उस पर जो कथा मुझे बताई गई, वह मेरे प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित है। वह युवक जितना अधिक शिक्षित था उतना ही सुन्दर भी था। उसका विवाह भी एक सुन्दर कन्या से हुआ था। अपने पारस्परिक सम्बन्ध में मेल-जोल स्थापित करने से पूर्व ही एक दिन वे आपस में झगड़ पड़े और एक-दूसरे को कठोर वचन कहने लगे। पति यौवन के नशे में धीरज खो बैठा और उसने पत्नी के मुँह पर एक ज़ोर

का थप्पड़ मार दिया। पत्नी अपमान से चिल्ला उठी और हमेशा के लिए उसका घर छोड़कर चली गई। पति ने कई बार क्षमा माँगी। मित्रों ने लड़की को समझाया और दम्पति के जीवन में मेल स्थापित करने की कोशिश की।

कथा की समाप्ति पर वह शिक्षक बोला, "अब इस युवक का क्या दोष? वह उसे बहुत चाहता है, परन्तु लड़की कहती है कि उसके अपमान का अब कोई इलाज ही नहीं।"

यह अति की घटना है। ऐसे क्रोधी प्राणी कम ही होते हैं, परन्तु होते ज़रूर हैं। प्रत्येक पति-पत्नी का कर्त्तव्य है कि वे पारस्परिक प्रेम के साथ परस्पर सम्मान भी करें।

युवा जोड़ों के प्रति मेरा यह स्थायी संकेत है कि जब वे माता-पिता बनते हैं तो एक-दूसरे के प्रति उनका व्यवहार सम्मानपूर्ण होना चाहिए। मैंने ऐसे कई दुखान्त दृश्य देखे हैं, जहाँ माता-पिता के पारस्परिक असम्मान ने बच्चों के जीवन को अन्धकारमय बना दिया। मैं एक ऐसे परिवार को जानता हूँ कि जहाँ पति-पत्नी ने केवल मतभेद के कारण अपने घर को उजाड़ दिया। इनके दो बेटे थे। एक पुत्र जो माता के साथ रहता था, पिता का प्यार भी पाना चाहता था। वह अपने पिता के पास गया ताकि अपने माता-पिता में शान्ति और मेल करवा सके। पिता उससे रूखेपन से पेश आया और कहते हैं कि उसकी माँ के सम्बन्ध में बुरा-भला भी कहा। लड़के को बड़ा दु:ख हुआ और वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा। बहुत देर तक वह मानसिक चिकित्सालय में रहा। माता के दु:ख का अनुमान ही किया जा सकता है। उसने दीनता पूर्वक अपने पति से प्रार्थना की कि आपस के अनमेल को समाप्त कर दें और बच्चों को एक शान्त और सुखी घर प्रदान करें। परन्तु पति न पिघला और उनका घर बरबाद हो गया। जहाँ तक मैं उस स्थिति को पहचान सका, मेरा विश्वास है कि वह सब पारस्परिक सम्मान के अभाव के ही कारण थी। परिणाम यह हुआ कि वे दोनों सदा के लिए एक-दूसरे से जुदा हो गए और बच्चों का जीवन बरबाद हुआ। माता-पिता से मेरी प्रार्थना है कि अपने बच्चों और सुखी गृहस्थ की नींव के लिए अपने सम्बन्धों में पारस्परिक सम्मान को बनाएँ।

(पी. वी. कनल)

कर्मों की आवाज शब्दों से भी ऊंची होती है
दूसरों को नसीहत देना तथा
आलोचना करना सबसे आसान काम है
सबसे मुश्किल काम है चुप रहना
और आलोचना सुनना .....
यह आवश्यक नहीं कि हर लड़ाई जीती ही जाए
आवश्यक तो यह है कि
हर हार से कुछ सीखा जाए ..... ।।

क्या ईश्वर है?

एक कल्पना

(रेणु माथुर)

एक बार भगवान (परमात्मा) भी बड़ी दुविधा में फंस गये क्योंकि लोगो की बढ़ती आस्था और साधना वृति से वो प्रसन्न तो थे लेकिन फिर भी उन्हें कुछ व्यावहारिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था, क्योंकि जब भी कोई दुखी या मुश्किल में होता है वो भगवान के पास भागा - भागा आता है और उन्हें अपनी परेशानियां दूर करने को कहता हैं। लोगों के कुछ न कुछ मांगने की समस्या से दुखी और परेशान होकर उन्होंने इस समस्या के निराकरण के लिए सभी देवताओं की बैठक बुलाई और उनसे इस संबंध में अपनी राए मांगी। भगवान बोले कि 'मनुष्य की हमेशा कुछ न कुछ मांगने की आदत से मैं दुखी हो गया हूं और मैं मनुष्य की रचना करके कष्ट में पड़ गया हूं अब न तो मैं कहीं शांति पूर्वक रह सकता हूं और न ही कहीं बैठकर ध्यान लगा सकता हूं।

आप लोग कोई ऐसा स्थान बताएं जहां मनुष्य कभी न पहुंच पाये। भगवान के विचारों का आदर करते हुए देवताओं ने अपने - अपने विचार प्रकट किए। गणेश जी बोले आप हिमालय की चोटी पर चले जाएं, तो भगवांन ने कहा वह स्थान तो मनुष्य की पहुंच में है। उसे वहां पहुंचने में अधिक समय नहीं लगेगा। इंद्र ने सलाह दी कि किसी महासागर में चले जाएं। इस पर वरुण देव ने ये सलाह दी कि आप अंतरिक्ष में चले जाएं। भगवान ने कहा एक दिन मनुष्य वहां भी पहुंच जाएगा। भगवान निराश होने लगे। अंत में सूर्यदेव ने कहा कि भगवन आप एक काम करें आप मनुष्य के हृदय में बैठ जाएं, इससे मनुष्य हमेशा आपको बाहर ही तलाश करता रहेगा पर यहां अपने हृदय में कभी न तलाश करेगा और कुछ ही योग्य लोग होंगे जो आप तक पहुँच पाएंगे। इससे आपको कोई परेशानी भी नहीं होगी। सूर्यदेव की बात भगवान को पसंद आई और भगवान उसी दिन के मनुष्य के हृदय में बैठ गये। उस दिन के बाद से मनुष्य हर बाहरी जगह में भगवान को तलाश कर रहा है लेकिन अपने हृदय में बैठे भगवान को नहीं देख पा रहा है जो उसके भीतर है। सच ये है कि ईश्वर का अस्तित्व वैसा नहीं है जैसा हम समझते हैं। दरअसल यहां प्रश्न यह उठता है कि क्या ईश्वर है? यदि दुनिया में कुछ विषय विवाद और भ्रम के है तो उनमें यह भी एक अति विववादास्पद विषय है। संक्षेप में विचार करते हैं कि क्या ईश्वर है? इस संबंध में मेरा विचार है कि हम सब ईश्वर में विश्वास क्यों करते हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि हम सबको पैदा होने के समय से ही हमारे चारों तरफ ऐसा पूजा - पाठ का वातावरण देखने को मिलता है कि सब के सब ईश्वर में विश्वास करते हैं। और यह सब हम लोग देखते - देखते हुए बड़े हुए हैं। इसीलिए हमारी यह धारणा बन गयी है कि ईश्वर होता है और यही विचार दिमाग में परत दर परत जमा होते जाते हैं और हमारी धारणा बन जाती है जिसमें विवेक का कोई स्थान नहीं होता। मैं कहूं कि क्या आपने ईश्वर देखा है? क्या कोई सबूत है? यही बात स्वर्ग और नर्क के बारे में लागू होती है। लोग कहते हैं कि स्वर्ग जाना हो तो ऐसे

ऐसे अच्छे काम करो वरना नर्क में जाओगे। जिस स्थान को आज तक किसी ने देखा नहीं और जिसका कोई प्रमाण नहीं उसको सब मानते आ रहे हैं, आखिर क्यों? क्योंकि हम सबको बचपन से यही घुट्टी पिलायी जाती है। हमारा जो वर्तमान है, संसार है, जो दिखायी दे रहा है जो स्वयं में जीता जागता प्रमाण है उसको 'माया' (अर्थात जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं) कहा जाता है कि यह मिथ्या है, क्षणभंगुर है इसको भूल जाओ।

जबकि सच केवल यही है कि जो पल हम जी रहे हैं वही सच है। हम इन्हीं पलों में वे सब कार्य करें जिससे इंसानों, जानवरों, पर्यावरण की भलाई हो। लेकिन हम लोग यह नहीं करते, बस जिस माता-पिता को जीवन भर सुख न दे सके उनके मरने पर हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए गरीबों को नहीं बल्कि दूसरों को भोजन कराते हैं, दान देते हैं। हम स्वर्ग पाने के लिए भूखे रहकर व्रत करते हैं, गंगा नहाने जाते हैं, इसकी कोई रसीद नहीं मिलती है न हम कोई सबूत मांगते हैं। जब मैं लोगों को इतनी तन्मयता से पूजापाठ में लीन देखती हूं तो मन में हमेशा एक सवाल उठता है कि ईश्वर कहां है? अगर है तो छिपा क्यों हैं? सामने क्यों नहीं आता है? आज जब नारी जाति पर बलात्कार और शोषण होता है तो ईश्वर इनकी रक्षा करने क्यों नहीं आता है? (क्या हम सभी पापी हैं?) ईश्वर को हम रोज कहते हैं कि तुम्हीं हो माता-पिता, तुम्हीं हो बंधू सखा। और मां बाप के लिए सभी बच्चे बराबर प्रिय होते हैं तो फिर इनकी चीखें क्यों नहीं सुनी जाती हैं जैसे द्रौपदी की सुनी गयी थी? क्या बलात्कार होते समय कोई बच्ची या औरत भगवान को याद नहीं करती हैं? आज जब धर्म के नाम पर जब हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एक दूसरे को मारते काटते है तब ईश्वर कहां होता है? उनको पहले ही सद्बुद्धि क्यों नहीं देता है जबकि वे लोग तो उसी के नाम पर लड़ते हैं। हम अपने सामने कितनों को धर्म और जाति के नाम पर मरते और मारते देखते हैं फिर भी हमारी आंखें नहीं खुलती हैं कि आज हम जिनको मार रहे हैं कल वही हमको मारेंगे। यह बात हमें क्यों समझ नहीं आती है, कि जो हमें दिखाई ही नहीं देता है भगवान के लिए हम लोग उनको मार रहे हैं लेकिन जिनका अस्तित्व है, जोकि जिंदा हैं उनको हम ईश्वर के नाम पर मारकाट करते हैं, तो फिर उस ईश्वर वास्तव में है और हमारे अंदर है तो हम क्यों उसके दर्शन के लिए जगह-जगह भटकते हैं? आज हम किसी इंसान पर प्रकृति का प्रकोप देखते हैं तो यही कहते हैं कि सब कर्मों का फल है यदि यह कर्मों का फल है तो उन छोटे बच्चों ने कौन से बुरे कर्म कर लिए जो प्राकृतिक विपदाओं में मारे जाते है। जब यह पूछा जाता है तो कह दिया जाता है कि इस जन्म में नहीं किए तो पूर्व जन्म में किए होंगे पर किए जरूर होंगे। क्या ईश्वर इतना लाचार है जो कि किसी के बुरे कर्मों का फल उसी जन्म में नहीं दे पाता। यह ठीक ऐसे ही है जैसे बिजनेस में एक साल के अंत का क्लोजिंग बकाया अगले साल का ओपनिंग बेलेंस हो जाता है। उसी तरह ईश्वर के यहां भी यही है कि चलो तुम्हारे जीवन की अवधि को तो बढ़ा पाना मेरे (ईश्वर के) वश में नहीं, लेकिन हां जो ये पाप तुम्हारे बचे रह गए हैं

इनका फल अगले जन्म में दूंगा। यह कैसा तरीका है, कर्म के परिणामों को भुगताने का। कंस, हिरण्याकश्यप, रावण जैसे राक्षसों को मारने के लिए ईश्वर ने अवतार लिया था आज हजारों ऐसे राक्षस समाज में खुले आम घूम रहे हैं परन्तु इनको मारने के लिए कोई अवतार नहीं ले रहा है। क्या ईश्वर यह सब नहीं देखता है? देखता है पर वही जवाब कि बच्चे ने पूर्व जन्म में बुरे कर्म किए होंगे, बात खत्म। यह सब कुछ देख सुन कर भी क्या हम सबका दिल यह पुकार नहीं करता है कि आखिर ईश्वर कहां है? और वह कब पापियों के संहार के लिए अवतार लेगा? लगता है ईश्वर सिर्फ दुकानों में, मूर्तियों के रूप में अच्छे कलात्मक चित्रों के रूप में है जो कि ऊंची-ऊंची बोलियों में बिकता है या फिर मंदिर की मूर्तियों में है जहां ईश्वर का इस्तेमाल भक्तों ने पैसा जमा करने, करोड़ों के मुकुट/मालाएं/हजारों रुपयों के प्रसाद चढ़वाने में किया जाता है। बहुत सवाल बाकी हैं अभी!

यह लेख 'आज समाज' समाचार पत्र से लिया गया है।

शुभ संग्राम

मल्लेका (8 मार्च से 12 मार्च तक)

यहां 8 मार्च 2017 से 12 मार्च तक सत्संग का प्रोग्राम रखा गया। श्रीमान जोगिन्द्र पम्मा जी और साथियों ने मन्दिर को विशेष रूप से धोकर, खूब सफाई की हुई थी। बहुत सुन्दर बिछाई की गई। चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान जगदीष प्रसाद जी और कल्याण से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पहुँच गए।

शाम 8.30 बजे पहली सभा – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। बहुत थोड़े जन हैं जो सेहत की कीमत समझ कर उसके नियम पूरे करते हैं। आगे कहा कि विद्या भी बहुत कीमती चीज़ हैं, परन्तु बहुत थोड़े जन इसकी कीमत समझते हैं। उसकी प्राप्ति के लिए कष्ट, त्याग करने का यत्न करते हैं। हमारा जीवन सबसे कीमती और मुख्य वस्तु है। बड़े दुख की बात है कि इस ठोस सचाई को देखने के योग्य, वह भी देव समाज में आकर और गुरू महाराज की कृपा से कोई जन योग्य होता है। यह सभाएं हमें हमारे जीवन की कीमत दिखाने में सहायता करती हैं। जीवन की हानि, धन की, शरीर की और किसी भी हानि से बड़ी हानि है। एक घटना द्वारा इस सत्संग की आवश्यकता और अपने निजी अन्धेरे के विषय में बताया। इस सत्संग की आवश्यकता वा महिमा का ब्यान किया और सभाओं से लाभ उठाने पर ज़ोर दिया।

9 – 3 – 2017 सुबह 9 बजे: – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने भजन के बाद बताया कि भगवान देवात्मा ने धर्म की दुनिया की बहुत अमुल्य सचाईयां बताई हैं, जिनको हम जल्दी जल्दी समझ नही सकते और हृदय ग्राही नहीं कर सकते। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य घोर

अन्धकार में घिरा हुआ है और सदा घिरे रहने के लिए बेबस है। हमें अपने अन्धकार का कोई सच्चा एहसास नहीं। फिर सभापति जी ने उपस्थित जनों से पूछा कि मनुष्य की हस्ती में सबसे मुख्य वस्तु क्या है? कई सेवकों ने जबाब दिया कि मनुष्य की आत्मा मुख्य वस्तु है। फिर पूछा कि क्या हम इसे सबसे कीमती समझते हैं? हां, में जबाब मिलने पर एक विशेष व्यक्ति से पूछा कि रात आप सभा में क्यो नहीं आए? उन्होंने बताया कि कुछ खास काम बताया, फिर प्रिंसीपल सरताज जी ने हाथ खड़ा करके जबाब दिया कि हम धन को कीमती समझते हैं, इसलिए इसके पीछे लगे हुए हैं, फिर प्रश्न किया कि सभा, साधन, सगंत अच्छी चीज है कि खराब? सभा अच्छा कहने पर सभापति जी ने स्पष्ट किया कि हम छोटे छोटे कामों को मोबाईल सुनने को भी अकसर ज़रूरी समझते हैं और सभा को विसार देते हैं। फिर केवल संगत में लाभ क्या होता है? इस सम्बन्ध में बताया कि इस संगत में लगातार आकर हमारा शारीरिक, मान्सिक, और व्यवहारिक पक्ष से यदि कोई उच्च परिवर्तन नहीं होता, तो उस संगत का कोई लाभ नहीं। इससे आगे देव समाज की संगत के कुछ लाभ वर्णन किए। यहां मिथ्या विश्वासों के बारे में रोशनी मिलती है, वह भयानक और हानिकारक नज़र आते हैं।

9 – 3 – 2017 रात 8.00 बजे :–

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। श्री जगदीष जी ने भजन का गान किया और फिर सभापति जी ने बताया कि नेचर क्या है, यह प्रश्न, उत्तर द्वारा इसे समझाया गया। इसके बाद बताया गया कि ईश्वर विश्वास क्यों झूठा है? फिर पूजनीय भगवान के अद्वितीय कारज की ओर ध्यान फेरते हुए पूछा कि कोई ऐसी बात बताओ जो ईश्वर ने न की हो और देवात्मा ने की हो। जबाब में एक सेवक ने भरे दिल से बताया कि देवात्मा गुरू ने मुझे मेरे पिता जी का उपकारी रूप दिखाया है। मुझे मेरे भाई के सम्बन्ध से फटने से बचाया है और मेरे भाई से मेल करवाया है। एक और सेवक ने बताया कि देवात्मा ने रिश्वतें वापिस करवाई हैं, किसी ईश्वर ने ऐसा नहीं किया। फिर सभापति जी ने कहा कि कोई ऐसी बात बताओ जो आपके अपने जीवन के परिवर्तन की न हो, फिर ऐसे ही प्रसंग में सभापति जी ने श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी के जीवन की कुछ झांकियां प्रस्तुत की। फिर और कई आश्चर्य जनक परिवर्तनों का वर्णन किया। जिससे सबके हृदय ऐसे महान कारज के आगे झुक रहे थे।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी के प्रश्न करने पर कि भगवान का कारज अच्छा है या बुरा? इसके उत्तर में सबने कहा कि यह कारज बहुत महान है। उसके बाद श्रीमान जी ने कहा कि यदि यह कारज इतना महान है, तो हमें कोई ऐसी बात नही करनी चाहिए, जिससे इस कारज को कोई हानि हो, बल्कि अपने जीवनों से इसे और बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। बहुत अच्छा वातावरण बना, सबके दिल छूए गए। सब इस कारज से जुड़ने के सौभाग्य को अनुभव कर रहे थे।

10 – 3 – 2017 सुबह 9.15 बजे: –

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। जगदीष जी ने "मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन" नामक भजन का गान किया। उसके बाद सभापति जी ने नेचर के विषय में बताया कि नेचर के चारों जगतों में

नियम काम करते हैं। हर अस्तित्व में हर समय परिवर्तन पैदा हो रहा है। नेचर के नियम हर समय और हर अस्तित्व पर हावी हैं। एक नियम विश्वव्यापी है, वह परिवर्तन का नियम है। मनुष्य का शरीर, दिमाग और स्वभाव हर समय बदल रहा है। एक सुन्दर बहुत हुशियार लड़की के भीतर एक शादी में शामिल होकर ऐसा परिवर्तन आया कि उसकी पढ़ाई में रुचि न रही। बहुत कम अंकों से वह पास हो सकी। सभापति जी ने अपना तजरबा बताया कि एक दोस्त की संगत से शारीरिक व्यायाम का शौक पैदा हो गया, परन्तु पढ़ाई की तरफ उतना ध्यान न रहा। एक मेरा और होनहार और हुशियार साथी ग़ल्त संगत में पड़कर भटक गया और पढ़ न सका। गंगानगर से अग्रवाल साहिब, पदमपुर, हनुमान से होते हुए पहुँच गए थे।

मुसलमान के ज़ोरदार प्रभाव से एक बड़े ज़िमीदार का लड़का मुसलमान बनकर पाकिस्तान चला गया। अपनी दो पत्नियों और बच्चों समेत परिवार को छोड़कर देश से भी जुदा हो गया।

फिर इसी सभा में श्री सभापति जी ने बताया कि जब कोई मनुष्य हमारी इच्छा को पूरा नही करता, या हमारे किसी सुख में रुकावट पैदा करता है, तब हम उसे घृणा करते हैं। यह घृणा हमारे जीवन का नाश करती है। हम जीवन के पथ से भटक जाते हैं। हमारी आंखों से उपकारियों के उपकार वा गुण ओझल हो जाते हैं। श्रीमान नौध सिंह जी के जीवन के कई सुन्दर पक्षों को रोशन किया। वह अपने उपकारियों का बहुत सन्मान करते थे। उनका कमरा साफ करते थे, उनकी वस्तुओं को साफ करते थे। कई वर्षें तक उनका नाश्ता बड़े प्रेम से तैय्यार करना आदि कृतज्ञ भाव से करते रहे। यह सभा श्रोतागण और स्कूल के बच्चों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी। इस लिए एक धर्म सम्बन्धी ने कार पर चार धर्म सम्बन्धियों को ले जाकर घर में खाना खिलाया और 500 रूपये दान दिया।

10 – 3 – 2017 रात 8.15 बजे: – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि भगवान देवात्मा की अद्वितीय शिक्षा मनुष्य के स्तर से बहुत ऊंची है। बहुत समय लगेगा जब मानवता का स्तर ऊंचा होता जाएगा और इस शिक्षा की सही कदर जागेगी। आज जो समाज की अवस्था है, जिसमें बलात्कार के घृणित दृश्यों की भरमार है, मासूम पशुओं के खून के नाले बह रहे हैं, भाई भाई, पिता सन्तान, पति पत्नी और अन्य सम्बन्धों में गहरा नर्क छाया हुआ है। मिथ्या और पापाचार के भीषण दृश्यों का चित्रण किया। फिर बताया कि धर्म उच्च भावों का नाम है, जहां उच्च भाव नहीं, वहां धर्म नहीं। श्रद्धा, परसेवा, कृतज्ञता के बिना कोई धर्म नहीं हो सकता। फिर कृतज्ञता का मानवजीवन में महत्व ब्यान किया। उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कृतज्ञ जनों के जीवनों की घटनाएं पेश की। सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी, सरदार सावन सिंह जी के महान शुक्रगुज़ार जीवनों की हृदय स्पर्शीय झांकी पेश की। भामाशाह, पन्ना धाई शुक्रगुज़ारी के फरिश्ते थे। मानवता को उनके सामने नमन करने की आवश्यकता है। हमारे महान उपकारी श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की परम महानता वा उपकारों को बहते आंसूओं से ब्यान किया। इस सारे ब्यान से सभा का मण्डल और उच्च हो गया। हाज़रीन ने भी काफी लाभ उठाया।

11 – 3 – 2017 सुबह 9.15 पर: – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। जगदीष जी द्वारा दो भजनों के गान के बाद सभापति जी ने बताया कि गुरू महाराज की शिक्षा सब धर्मों से अलग है। दो सचाईयां जो गुरू महाराज ने बताई हैं उनका और धर्मों में ज़िकर नहीं। पहली सचाई कि मनुष्य बुद्धि, आंखें रखकर भी बेहद अन्धेरे में है। दूसरी सचाई नेचर का हर आस्तित्व प्रति क्षण बदलता रहता है। मनुष्य का स्वभाव भी शरीर की तरह बदलता है। अपना भला चाहने वालों को अपने स्वभाव के विषय में बहुत सर्तक रहने की आवश्यकता है। संगत में आने का उत्साह घट जाता है, जब संगत विसार देते हैं, तो हम कुछ और बन जाते हैं। यही बात दान देने के सम्बन्ध में और परसेवा के सम्बन्ध में है। श्रीमान देवी चन्द जी पुराने जमाने में हर रोज एक पैसा, फिर 2 पैसे, फिर आना, चवन्नी, अठन्नी, और रुपये दान करते करते लाखों की सम्पति दान करने के योग्य बन गए। इस प्रकार अपने स्वभाव के अच्छे वा बुरे परिवर्तन को देखने की आवश्यकता है। गुरू महाराज जो हितकर परिवर्तन पैदा करते हैं, उसका ब्यान किया।

दुपहिर 12.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। लोकल पब्लिक स्कूल के बच्चों और स्टाफ मैंबर की वैनें भरकर आई। उन्होंने सन्मान करने की आवश्यकता बताई, एक दूसरे की सेवा, सहायता की आवश्यकता को समझाया। उच्च गुणों वा उच्च चरित्र से सफलता प्राप्त होती है। एक मां की सेवा करने वाला जन उच्च पद प्राप्त करने के योग्य हो गया। माता पिता का सन्मान करने से और सफलताएं भी मिलती है। इसके कई उदाहरण प्रस्तुत किए। इस सभा मं 70 के लगभग विद्यार्थी वा 10 - 12 मैंबर स्टाफ के भी शामिल थे।

11 – 3 – 2017, रात 8.15 पर :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि हमारे सामने होना चाहिए कि हम जीवन दाता से कौन सा जीवन मांग रहे हैं। उच्च भावों द्वारा उच्च गतियां करने का जीवन। यह जीवन देवात्मा दान देते हैं। नीच भावों से मुक्त करने का जीवन भी सत्गुरू ही दान देते है। सभापति जी ने कई नीच भावों का जैसे धन अनुराग, स्वार्थ अनुराग, आलस्य अनुराग, काम वासना आदि का वर्णन किया। अधिकारी जन जब इनकी भयानकता को समझ जाते हैं तो इससे मुक्त होना चाहते हैं। देव प्रभावों की प्राप्ति ही मनुष्य की इस आवश्यकता को पूरा कर सकती है। अपने निजी जीवन का अनुभव उन्होंने बताया यह सभा काफी लाभदायक प्रमाणित हुई। उन्होंने स्वयं के अपनी धर्म पत्नी के सम्बन्ध में आए परिवर्तन का ज़िकर किया कि किस प्रकार यह शुष्क और लापरवाही का रिश्ता सेवा और स्नेह में भगवान की कृपा से बदल गया।

12 – 3 – 2017 सुबह 9.15 : – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- गुरूमहाराज का सुन्दर फूलों द्वारा अर्चन, भजन का गान, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या के बाद दिली भावों से सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की।

फिर सभापति जी ने बताया कि A Thing of beauty, joy forever। सुन्दरता की वस्तु सदा खुशी प्रदान करती है। आज सुबह बहुत सुन्दर दृश्य पैदा हुआ। प्रिंसीपल सरताज जी और उनकी धर्म पत्नी, बीबी दविन्द्र जी, उनके दोनों बच्चे।

श्रीमान सुखदेव जी और उनकी धर्म पत्नी, उनका बच्चा भी शामिल होकर सारे सेहन की झाड़ूओं द्वारा बहुत सुन्दर सफाई कर रहे थे। सरताज जी हाथ में कस्सी लेकर झाड़ फूस को साफ करके ऊंची नीची जगह समतल कर रहे थे। यह दृश्य हृदयों को झुकाने वाला था, श्रद्धावान हृदय इनके आगे झुक रहे थे। आज पति पत्नी के सम्बन्ध में विशेष दिन पर यह दृश्य बहुत सुन्दर दिख रहा था।

जगदीष जी ने पहले भजन गाया "सच्चे पति और पत्नी वह जो उच्च लक्ष्य रख मेल बढ़ावें" सभापति जी ने बताया कि विकास क्रम उच्च हस्तियां पैदा करता है। दर्दमन्दों के दर्दी पैदा करता है। सर्व्वोत्म विकास क्रम की देन देवात्मा का आर्विभाव और सम्बन्धों के ईलावा, पति का पत्नी पर जुलम देखकर, उस दर्द को अनुभव किया। देवात्मा ने फरमाया कि पति का उच्च लक्ष्य होना चाहिए। विवाहित साथी को उच्च बनाना है। उसकी शारीरिक, मान्सिक, वा हार्दिक अवस्था को उच्च बनाना है और विकास करना है। एक दूसरे का सन्मान करना सीखना है। बराबरी का रिश्ता होना चाहिए, वफादारी वा विश्वास का रिश्ता होना चाहिए। परस्पर सेवा का रिश्ता होना चाहिए। स्वार्थ त्याग कर एक दूसरे के प्रति कर्तव्य पालन करने हैं। यह इस रिश्ते का विशेष धुरा है। गुरू महाराज ने जालिम पतियों को बदलकर हमदर्द बनाया है। श्रीमान राम सिंह, श्री पी. वी. कनल साहिब फरिश्ता पति थे। श्रीमती कनल जी पुकार उठी थी कि यदि मैं किसी बादशाह की महारानी होती तो मेरा यह सन्मान न होता, वह मेरे देवता थे। श्रीमती सत्यवती जी सीकरी की पति भक्ति का जिकर किया।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- मुझ पर और उपकारों के ईलावा पति पत्नी के सम्बन्ध में पिछले 20 वर्ष में विशेष परिवर्तन आया है। अब हमारा सम्बन्ध एक दूसरे के सम्बन्ध में सन्मान और सेवा का बन गया है। मैं छोटे मोटे कामों में उनकी सहायता भी करता हूं। गुरू महारज के इस उपकार का मैं बदला चुका नहीं सकता। सभा में पति पत्नियों ने एक दूसरे के गले में हार डाले और सन्मान किया, बहुत हितकर मण्डल बना।

3150 रूपये दान मिला। श्रीमान सुन्दर लाल जी ने 1000 रूपये और श्रीमान बलदेव सिंह जी ने 500 रूपये अलग दान दिया।

एक हाजरीन

आपकी जिंदगी तब नहीं बदलती .....

जब आपका बॉस बदलता है, जब आपके दोस्त बदलते हैं,

जब आपके पार्टनर बदलते हैं, या जब आपकी कंपनी बदलती है।

जिंदगी तब बदलती है, जब आप स्वयं को बदलते हैं,

जब आप अपनी सीमित सोच तोड़ते हैं,

जब आप इस बात को महसूस करते हैं,

कि अपनी जिंदगी के लिए सिर्फ और सिर्फ आप जिम्मेदार हैं

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बाकी पृष्ठ 2 का

तब जीवन पाओ" को हमने गहरे गढ़े में फैंक दिया है। समाज स्वार्थ पूर्ति का साधन बन गई है। अपना गुट कायम रखने के लिए अपने साथियों के भी स्वार्थ पूरे करना देव समाज का मुख्य कार्य रह गया है। भगवान ने फरमाया है, "पूर्ण स्वार्थी सब शैतान होते हैं। स्वार्थ से तरह तरह की बुराईयां फैलती हैं, जो शैतान के साथ मन्सूब की जाती हैं।"

(4) वह समाज, जिसके सदस्य एक एक बुराई के विरुद्ध खड़े हो जाते थे, किसी की परवाह नहीं करते थे, उसी देव समाज में गुट बनाकर एक एक बुराई की पोषकता की जाती है। अपने गुट के आदमी की हर बुराई पर पर्दा डाला जाता है और बुराई के विरुद्ध खड़े होने वाले को पछाड़ा जाता है।

(5) वह समाज जिसकी संस्थाओं में शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा मुख्य स्थान रखती थी, वह पैसा कमाने का साधन बन कर रह गई हैं। यहां गरीबों और अनाथों को मुफ्त शिक्षा देने की रिवायत थी, वहां गरीब माँ बाप की मजबूरी का लाभ उठाकर उनका खून निचोड़ा जाता है। और वह पैसा धार्मिक कहलाने वाले नेताओं के ऐश के लिए प्रयोग किया जाता है।

(6) वह समाज जिसमें ईमानदारी के लासानी उदाहरण थे, वहां बेईमानी की पोषकता होती है। हिसाब चैक करवाना और करना असम्भव सा हो गया है। दूसरों का पैसा अपने ऊपर खर्च करना अपना गौरव बढ़ाना अनुभव होता है।

(7) वह समाज जहां हानिपरिशोध की घटनाओं का सुन्दर वातावरण था, अब बड़ी से बड़ी गलतियाँ करके एक एक जन उसको मानना अपनी हेठी समझता है, चाहे उससे सारी समाज तबाह हो जाए उसकी बला से।

(8) वह समाज जिसमें श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी के दृश्यों से प्रभाव दायक मण्डल बनता था, वहां अपने से बड़ों की निंदा करने, फक्कड़ बकने, उनको नीचा दिखाने और झूठे दोषारोपण करने में अपनी शान और योग्यता समझी जाती है।

हमने इन रिले रेस में क्या भाग निभाया है, उस पर सोचें, आने वाली नसलें हम पर थूकेंगी कि ऐसी पवित्र समाज को गन्धला करने वाले 'यह लोग' थे।

सुरजीत बराड़
श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts